(4) बर्ट्रैण्ड रसेल
(Bertrand Russell, 1872-1970)

"Too little liberty brings stagnation and too much brings chaos. What is desirable is neither suppressive discipline without inner freedom, nor complete freedom without any self control, but the self discipline which flows from a wise combination of both, the freedom and the discipline."

—Bertrand Russell

जीवन-वृत्त (Life Sketch)

बर्ट्रैण्ड रसेल का जन्म इंग्लैण्ड के ट्रेलेक (वेल्स) में 18 मई 1872 ई० में हुआ। 3 वर्ष की आयु में बचपन में ही उनके माता-पिता का देहान्त हो गया। फलस्वरूप इनके दादा-दादी ने इनका पालन-पोषण किया। रसेल के पिता का नाम **विस्काउण्ट एम्बरले** तथा माता का नाम **केट एम्बरले** था। रसेल परिवार इंग्लैण्ड के इतिहास में प्रसिद्ध रहा है। बर्ट्रैण्ड रसेल के **बाबा लार्ड जॉन रसेल** ब्रिटेन के प्रधामन्त्री रह चुके थे। रसेल का लालन-पालन उनके पितामह लॉर्ड जॉन रसेल तथा पितामही लेडी जॉन रसेल ने किया। घर पर रहकर ही इन्होंने

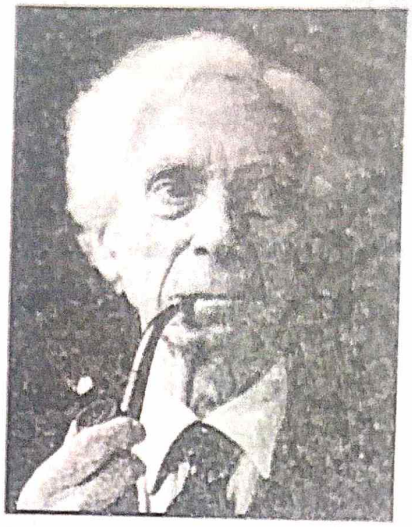

जर्मन और फ्रेंच भाषा का अध्ययन किया। 1890 में इन्होंने ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज में प्रवेश किया। ग्रेजुएट होने के बाद उन्होंने 'The Foundations of Geometry' नामक शोध-प्रबन्ध लिखा। दर्शनशास्त्र इनका विशेष प्रिय विषय था। जब परीक्षा में इन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया तो इन्हें रेंगलर पद से सम्मानित किया गया। 1894 ई० में इन्होंने इंग्लैण्ड में फ्रांसीसी दूतावास में नौकरी कर ली। 1895 ई० में इन्हें ट्रिनिटी कॉलेज के 'फैलो' (Fellow) के पद पर नियुक्त किया गया। इन्हें 'गणित' विषय भी बहुत प्रिय था तथा वे इटली के 'पीनो' के गणित-सम्बन्धी कार्य से अत्यन्त प्रभावित थे। 1903 ई० में इनकी पुस्तक 'Principles of Mathematics' प्रकाशित हुई। 1910 ई० में इन्हें ट्रिनिटी कॉलेज में प्रधानाचार्य के पद पर नियुक्त कर दिया गया। प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो जाने पर इन्होंने 'No Conscription Fellowship' में भाग लिया जिसके लिये इन्हें 100 पाउण्ड का दण्ड दिया गया तथा 100 पाउण्ड के बदले में इनका पुस्तकालय जब्त कर लिया गया। इस दण्ड के परिणामस्वरूप इन्हें कॉलेज की नौकरी भी छोड़नी पड़ी परन्तु उनकी योग्यता को देखकर इनकी हार्वर्ड में प्राध्यापक के पद पर नियुक्ति हो गई परन्तु इन्हें हार्वर्ड जाने का सरकार ने पासपोर्ट नहीं दिया, अत: इन्होंने 'ट्रिब्यून' समाचार-पत्र में सरकारी अन्याय के विरुद्ध लेख लिख दिया। इसके फलस्वरूप इन्हें छह मास का कारावास हुआ। कारावास में ही इन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Introduction to Mathematical Philosophy' की रचना की। 1920 में चीन सरकार ने इन्हें पीकिंग विश्वविद्यालय में भाषण देने के लिये आमन्त्रित किया।

प्रारम्भ में रसेल ईश्वर पर विश्वास रखते थे, किन्तु बाद में वे नास्तिक बन गये। 22 वर्ष की अवस्था में 31 दिसम्बर, 1894 में उनका प्रथम विवाह **एलिस** से हुआ। सन् 1920 में चीन से लौटने के बाद उन्होंने **डोरा रसेल** से दूसरा विवाह किया। सन् 1936 में उनका तीसरा विवाह **पेट्रिसिया स्पेन्स** से हुआ। सन् 1952 में रसेल ने 80 वर्ष की अवस्था में **कुमारी एडिथ फिंच** से चौथा विवाह किया। यौन जीवन के प्रति उनके विचार बड़े क्रान्तिकारी थे।

2 फरवरी सन् 1970 **'पेनराइनडयूडरीथ'** (Panrhyndeudreeth) के निकट **'प्लास पेन राइन'** (Plas Pen Rhyn) में इस महान दार्शनिक, शिक्षाविद् तथा राजनीतिज्ञ का प्रात: 8 बजे निधन हो गया।

बर्ट्रैण्ड रसेल की प्रमुख रचनाएँ
(Bertrand Russell's Main Writings)

बैट्रैण्ड रसेल की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

1. Principles of Mathematics (1903)
2. Principles of Social Reconstruction (1916)
3. Introduction to Mathematical Philosophy (1920)
4. The A.B.C. of Atoms (1923)
5. The A.B.C. of Relativity (1925)
6. On Education (1026)
7. The Analysis of Matter (1926)
8. Principal Mathematics (1927)
9. The Outlines of Philosophy (1928)
10. Sceptical Essays (1928)
11. Marriage and Morals (1929)

12. The Conquest of Happiness (1930)
13. The Scientific Outlook (1931)
14. Education and the Social Order (1032)
15. Freedom and Organization (1934)
16. Power : A New Social Analysis (1938)
17. An Enquiry into Meaning and Truth (1940)
18. A History of Western Philosophy (1946)
19. Human Knowledge, its Scope and Limits (1948)
20. Authority and Individual (1949)
21. New Hopes for a Changing World (1951)
22. The Impact of Science of Society (1952)
23. The Problem of China
25. Roads to Freedom.

(5) ईमानुल काण्ट
(Imanuel Kant, 1724-1804)

जीवन-वृत्त (Life-Sketch)

ईमानुल काण्ट (Imanuel Kant) एक महान दार्शनिक, शिक्षा विशेषज्ञ, लेखक, प्रिय शिक्षक, शिक्षा वैज्ञानिक का जन्म कोनिंगबर्ग (Konigsberg) जो अब कालिनग्रद (Kalinigrad) के नाम से जाना जाता है, में 22 अप्रैल, 1724 को हुआ। उसके माता-पिता एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्ध रखते थे तथा उदारतावाद (Pietism) तथा ईसाई जीवन पद्धति से प्रभावित थे। उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा कोनिंगबर्ग के सुदूर क्षेत्र में स्थित हॉस्पिटल स्कूल तथा सी०एफ० ग्रामर स्कूल से प्राप्त की जहाँ लेटिन, ग्रीक व धर्म पर पाठ्यक्रम में विशेष बल दिया जाता था। सोलह वर्ष की आयु में 1740 में कॉण्ट ने बोनिबर्ग विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। कॉण्ट की पारिवारिक आर्थिक स्थिति संतोषजनक न होने के कारण इन्हें पैसे कमाने के लिये सम्भ्रानत परिवारों में प्राइवेट ट्यूटर के रूप में भी कार्य करना पड़ता था। सन् 1755 में इन्होंने अपनी इसी विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इस विश्वविद्यालय में इन्होंने अवैतनिक प्राध्यापक के रूप में न्यूटन, ह्यूयम, रूसो के कार्यों का विश्लेषण किया। साथ ही इन्होंने, भूगोल, शिक्षा, भौतिकशास्त्र आदि विषयों पर लेखन कार्य के साथ-साथ व्याख्यान भी दिये। कई वर्षों तक मानसिक स्वास्थ्य खराब रहने के कारण सन् 1804 में इनकी मृत्यु हो गई।

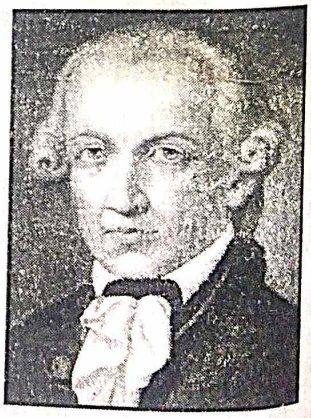

काण्ट का मुख्य स्थान शिक्षा-दर्शन के विभिन्न पहलुओं के सन्दर्भ में स्थापित माना जाता है। उन्होंने बताया कि मानव क्रियाएँ तीन मानसिक शक्तियों, इच्छा (Desire), (Volition) तथा संज्ञान (Cognition) पर निर्भर करती हैं। अपने प्रारम्भिक दिनों में ट्यूटर के रूप में कार्य करने के कारण उन्होंने ट्यूटोरियल शिक्षा (Tutorial Education) पर भी अपने शैक्षिक विचार दिये। किंग्सले (Kingsley) के अनुसार इन्होंने ट्यूटोरियल शिक्षा, पब्लिक एवं प्राइवेट शिक्षा के गुण-दोषों पर भी प्रकाश डाला।

कॉण्ट ने बताया कि मानवता के विकास के लिये शिक्षा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उनका विश्वास था कि आदमी वही है जो शिक्षा ने उसे बनाया है, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं। एक स्वयं पढ़ा-लिखा आदमी ही दूसरे व्यक्ति को शिक्षित कर सकता है। उनके विचार से शिक्षा का तात्पर्य देखभाल, अनुशासन व अनुदेशन से है। इस दृष्टि से छात्र का ठीक से ध्यान रखा जाना चाहिए, उसके खान-पान की ओर विशेष ध्यान दिया जाना

चाहिए तथा उसकी सुरक्षा का भी ध्यान रखा चाहिए। अनुशासन से ही वहशीपन या जंगलीपन पर नियन्त्रण रखा जा सकता है। इसीलिये बालक अपने पढ़े-लिखे माता-पिता का अनुसरण करते हैं।

क्रेंज (Kanz) के अनुसार काण्ट के शैक्षिक योजना के सम्बन्ध में विचार भी सराहनीय हैं। काण्ट के अनुसार शिक्षा की योजना वैश्विक परिदृश्य में की जानी चाहिये तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से संसार में जो श्रेष्ठ हो उसे शैक्षिक योजना में समाहित करना चाहिये। अच्छी शिक्षा सभी चीजों का आधार स्वयं होती है। इसीलिये उनका विचार था कि छात्र को वर्तमान में जीने की दृष्टि से ही शिक्षित न किया जाये बल्कि उसकी निगाहें आज के चुनौतीपूर्ण परिवेश पर भी टिकी होनी चाहिये, तभी वह जीवन में सफल हो सकता है। वे आगे कहते हैं कि व्यक्ति विशेष की खुशी व दुर्भाग्य स्वयं उसी के ऊपर निर्भर करती है।

काण्ट व शैक्षिक दर्शन
(Educational Philosophy)

काण्ट ने शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है जिनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

(1) शिक्षा के मुख्य उद्देश्य (Main Aims of Education)—**काण्ट** के अनुसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य-मानवता का अहसास, शान्ति कायम रखना, बौद्धिक क्षमतायें प्राप्त करना, चरित्र निर्माण आदि हैं। उन्होंने चरित्र-निर्माण को बौद्धिक क्षमतायें अंकित करने से अधिक महत्त्व दिया। काण्ट कहते हैं कि एक चरित्रवान् व्यक्ति में कुछ विशेषतायें स्वत: निहित होती हैं जैसे--आज्ञापालन, सत्य बोलना व सामाजिकता। काण्ट के अनुसार शिक्षा के प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं—

(1) अनुशासित चिन्तन (Disciplined Thinking)।

(2) एक बेहतर सोच रखना (Creation of a refined Standpoint)।

(3) सभ्यता में निखार (Fortification of Civilization)।

(4) नैतिक एकीकरण प्रदान करना (Imparting Moral Integrity)।

उन्होंने अपनी शिक्षा के प्रारूप में नैतिकता पर बहुत बल दिया है। नैतिकता से उनका तात्पर्य है कि जो पढ़े लिखे लोग हैं उनमें इस प्रकार का दृष्टिकोण विकसित हो जो अच्छे कार्यों के लिये समर्पित हो। ये अच्छे कार्य सभी के लिये होने चाहिये। उनका कहना है कि छात्रों को स्वयं उनके लिये ही शिक्षित न किया जाये बल्कि वे दूसरों के काम भी आ सकें।

प्रश्नावली

1. मीमांसा दर्शन क्या है? मीमांसा और वेदान्त के सम्बन्ध को स्पष्ट कीजिए।
2. मीमांसा दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए।
3. मीमांसा दर्शन का कर्मफल सिद्धान्त क्या है? वर्णन कीजिए।
4. मीमांसा दर्शन के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों और पाठ्यक्रम का वर्णन कीजिए।
5. मीमांसा दर्शन के अनुसार शिक्षण विधियों, अनुशासन और शिक्षक-शिक्षार्थी सम्बन्धों की विवेचना कीजिए।
6. ज्ञान क्या है? भारतीय दर्शन के अनुसार ज्ञान के दार्शनिक आधार क्या हैं?
7. ज्ञान मीमांसा क्या है? पाश्चात्य दर्शन के अनुसार ज्ञान के दार्शनिक आधार क्या हैं?